भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVIII अंक–10 31 मई, 2023

मूढ़ग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः। परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्।।

जो तप मूढ़तापूर्वक हठ से, मन, वाणी और शरीर की पीड़ा के सहित अथवा दूसरे का अनिष्ट करने के लिये किया जाता है–वह तप तामस कहा गया है।

श्रीमद्भगवद्गीता 17/19

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023/152650 दिनांक 12.05.2023 के अनुसार **प्रो. त्रिलोक सिंह** ने 09.05.2023 से संस्थान के ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–13ए2 में सह–प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/155716 दिनांक 17.05.2023 के अनुसार **प्रो. सैकत सरकार** ने 12.05.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–13ए1 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023/155750 दिनांक 18.05.2023 के अनुसार **प्रो. रविन्दर मोहन्ती** ने 15.05.2023 से संस्थान के ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

प्रो. रविन्दर मोहन्ती को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/154431 दिनांक 12.05.2023 के अनुसार **डॉ. श्रीराम टी.एस.** ने 12.05.2023 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/154995 दिनांक 16.05.2023 के अनुसार **डॉ. संदीप कुमार नायक** ने 15.05.2023 से संस्थान के यांत्रिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/156724 दिनांक 22.05.2023 के अनुसार **डॉ. के.पी. भार्गव कुमार** ने 22.05.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय/स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 31 मई, 2023 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

प्रो. राकेश खोसा, प्रोफेसर, सिविल इंजीनियरी विभाग

प्रो. राकेश खोसा ने 23 मार्च, 1988 को संस्थान में लेक्चरर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 22 अक्टूबर, 1998 में आपको सहायक प्रोफेसर; 30 अक्टूबर, 2006 में सह प्रोफेसर तथा 9 जून, 2014 में प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किया गया।

प्रो. राकेश खोसा ने 65 से अधिक मास्टर शोध प्रबंधों तथा 10 पीएच.डी. विद्यार्थियों एवं 12 डॉक्टरेट विद्यार्थियों का विभिन्न चरणों पर मार्गदर्शन किया। पियर रिव्यूड जर्नलों, सम्मेलनों तथा संगोष्ठियों में आपके 125 से अधिक प्रकाशन हैं। पाँच चल रही परियोजनाओं के अतिरिक्त, आपने विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के अलावा लगभग 35 परामर्श परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है। आपने राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न समितियों में अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं।

अत्यन्त मृदु एवं मिलनसार व्यक्तित्व के प्रो. राकेश खोसा अपने संकाय साथियों, स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रहे हैं।

श्री सबर सिंह चौहान (26158), तकनीकी अधिकारी, शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र

श्री सबर सिंह चौहान ने 28 जनवरी, 1987 को संस्थान में कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 19 अक्टूबर, 1987 को आपको वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में नियुक्त किया गया। 2 फरवरी, 1992 को आपको तकनीकी सहायक के रूप में नियुक्त किया गया। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी. एस. के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक के रूप में पुनः पदनामित किया गया। 1 मार्च, 2004 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको तकनीकी अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 21 फरवरी, 2012 को एवं 21 फरवरी, 2022 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। 13 दिसम्बर, 2022 को विभागीय पदोन्नति समिति (DPC) के अन्तर्गत आपको तकनीकी अधिकारी के रूप में पदोन्नत किया गया। मृदु एवं मितभाषी स्वभाव के श्री सबर सिंह चौहान एक मेहनती एवं कर्मठ तकनीकी अधिकारी रहे हैं।

श्री प्रेम सिंह (70035), कनिष्ठ मैकेनिक, निर्माण संगठन

श्री प्रेम सिंह ने 15 जनवरी, 1987 को संस्थान में ग्रुप 'डी' हेल्पर के रूप में वेतनमान 750–940/– रु. में कार्यभार ग्रहण किया था। 01 फरवरी, 1992 को आर.सी.डी. एस. के अन्तर्गत आपको 2650-4000/-रु. के वेतनमान में पदोन्नत किया गया। 01 फरवरी, 2005 को आपको एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत वेतनमान 4000-6000/5200-20200/-रु.+ग्रेड वेतन 2400/–रु. में उन्नयन दिया गया तथा 01 फरवरी, 2015 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको ग्रेड वेतन 2800/–रु. में उन्नयन दिया गया। मृदुभाषी श्री प्रेम सिंह एक योग्य एवं कर्मठ कनिष्ठ मैकेनिक रहे हैं।

श्रीमती बिमला (50752), अटेन्डेन्ट, भा.प्रौ.सं. अस्पताल

श्रीमती बिमला ने 28 जनवरी, 2003 को संस्थान में ग्रुप 'डी' अटेन्डेन्ट के रूप में वेतनमान 2550–3200/– रु. में कार्यभार ग्रहण किया था। 28 जनवरी, 2013 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको वेतनमान 5200-20200/-रु.+ ग्रेड वेतन 1900/-रु. में उन्नयन दिया गया। सौम्य स्वभाव की श्रीमती बिमला मेहनती एवं कर्मठ अटेन्डेन्ट रही हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय/स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

सह–पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक अन्योन्यक्रिया परिषद (CAIC) 2023-24

निर्वाचन अधिकारी (CAIC चुनाव, 2023-24) से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार सह–पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक अन्योन्यक्रिया परिषद (CAIC) 2023-24 के लिए निम्नलिखित प्रत्याशियों को विजेता घोषित किया गया है:–

पद	नाम	प्रविष्टि संख्या
महासचिव	शिवेन्द्र सिंह	2020BB10056
उप महासचिव (स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम एवं अनुसंधान)	भट्ट धैवत जाग्रतभाई	2022EEP2150
उप महासचिव (स्नातकपूर्व पाठ्यक्रम एवं अनुसंधान)	गर्धव वालिया	2020CH10084
तकनीकी क्लब के सचिव	दिपांशु रोहिला	2019CS50427
विभागीय सोसाइटी के सचिव	अबदुर रहमान	2019CH70150

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023/155942 दिनांक 18.05.2023 के अनुसार **प्रो. सुरेश जैन** (परिवहन अनुसंधान और चोट निवारण केन्द्र) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 18.05.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः प्रो. सुरेश जैन को 18.05.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

पुनर्नियुक्ति

प्रो. राकेश खोसा, सिविल इंजीनियरी विभाग को संस्थान संविधि के पैरा 13(2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात् 30.6.2023 तक के लिए सिविल इंजीनियरी विभाग में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्त किया गया है।

राजभाषा नियम 1976 नियम 5

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर आवश्यक रूप से हिंदी में दिए जाएं (अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों की पावती हिंदी में भेजे)। अतः सभी विभाग/केन्द्र/ अनुभाग/प्रकोष्ठ/ एकक आदि को सूचित किया जाता है कि वे हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों का उत्तर केवल हिंदी में दें और उनका रिकॉर्ड रखें। इसका उल्लंघन होने पर संबंधित अधिकारी जिम्मेदार होंगे।

संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वर्ष 2022–2023 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	1.क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2.क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3.क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4.क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य के क्षेत्र कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं एवं सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना।	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलैक्ट्रोनिक उपकरणों जिनमें कम्प्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किये जाए।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./नि.दे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथ रा.भा.वि. के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 02 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिन्दी में हो	40%	30%	20%

आजादी का अमृत महोत्सव

मनुष्यता के लिए अनुपम उपहार है योग

हमें यह आत्मसात करना होगा कि आनंद की तलाश तभी पूरी हो सकेगी, जब हम अपने ऊपर नियंत्रण करेंगे।

–गिरीश्वर मिश्र
दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर

आज के सामाजिक जीवन को देखें तो हर कोई सुख, स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि के साथ जीवन में प्रमुदित और प्रफुल्लित अनुभव करना चाहता है। मन में इसकी अभिलाषा लिए आत्यंतिक सुख की तलाश में सभी व्यग्र हैं और सुख है कि अक्सर दूर–दूर भागता नजर आता है। आज जब हम सब योग दिवस मना रहे हैं। तब हमें इसकी अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब हर कोई किसी न किसी आरोपित पहचान यानी टैग की ओट में मिलता है। मत, पंथ, पार्टी, जाति, उपजाति, नस्ल, भाषा, क्षेत्र समेत जाने कितने तरह के टैग भेद का आधार बन गए हैं और हम उसे लेकर एक–दूसरे के साथ लड़ने पर उतारू हो जाते हैं। हम भूल जाते हैं कि टैग से अलग भी हम कुछ हैं और इनसे इतर भी हमारा कोई अस्तित्व है। बाहर दिखने वाला प्रकट रूप ही सब कुछ नहीं होता। कुछ आंतरिक और सनातन स्वभाव भी हैं, जो जीवन और अस्तित्व से जुड़े होते हैं। हमारी पहचान हमें दूसरों से अलग करती है और सार्वभौमिक मनुष्यता और चैतन्य के बोध से दूर ले जाती है ।

धरती पर रहने वाले सभी मनुष्य शारीरिक बनावट में एक से प्राणी हैं। सभी जन्म लेते हैं, जीते हैं और अंत में मृत्यु को प्राप्त करते हैं। जीवन काल में हममें चेतना होती है। हम सभी पीड़ा और दुख महसूस करते है, जो भौतिक सूचना हमारी आंतरिक और बाह्य ज्ञानेंद्रियों से मिलती है, हम सब उसका अनुभव करते हैं। विकसित मस्तिष्क के चलते मनुष्य के पास तर्क, बुद्धि, संवेग, कल्पना और स्मृति की क्षमताएं भी होती हैं, जिनके साथ संस्कार बनते हैं। इन सबके साथ मनुष्य भावनाओं और संवेगों की अनोखी दुनिया में जीता है। ऐसे में यह बात अत्यंत महत्व की हो जाती है कि हम अपने आप को किस तरह देखते और पहचानते हैं। जब हम आरोपित पहचान के हिसाब से चलते हैं तो हमारी आशाएं–आकांक्षाएं भी आकार लेती हैं। उन्हीं के अनुरूप हम दूसरों के साथ आचरण भी करते चलते हैं। इस आपाधापी में आभासी, अस्थायी और संकुचित आधार वाली जीवनशैली अपनाते हैं और ऐसी भागमभाग वाली दौड़ में शामिल हो जाते हैं, जिसके चलते घोर प्रतिस्पर्धा जन्म लेती है। एक–दूसरे से आगे बढ़ने के चक्कर में हर कोई दूसरे का अतिक्रमण करने को तैयार है।

इस तरह वैमनस्य की नींव पड़ती है और बड़ी जल्द आक्रोश और हिंसा का रूप लेने लगती है। ऐसे में अनिश्चय, असंतोष और पारस्परिक तुलना के कारण तनाव और चिंता के भाव लगातार डेरा डाले रहते हैं। यही कारण है कि आज बड़ी संख्या में लोग अवसाद (डिप्रेशन) और कई तरह की दूसरी अस्वस्थ मनोदशाओं के शिकार होकर मनोरोगियों की श्रेणी में पहुंचने लगे हैं। मानसिक विकारों की सूची लंबी होती जा रही है और अमीर हो या गरीब, सभी उसमें शामिल हो रहे हैं। मानसिक रोगों की बहुतायत भौतिक जगत से कहीं ज्यादा हमारे मानसिक जगत की बनती–बिगड़ती बनावट और बुनावट पर निर्भर करती है। इसलिए उसकी देखभाल जरूरी लगती है। इसके लिए व्यक्ति को अपने जीवन की प्रक्रिया को सतत नियमित करते रहने की जो आवश्यकता है, योग उसकी पूर्ति करता है।

दुर्भाग्य से बाहर की दुनिया का प्रभाव इतना गहरा और सबको ढक लेने वाला होता है कि वही हमारा लक्ष्य बन जाता है और उसी से ऊर्जा पाने का भी अहसास होने लगता है। हम अपने अंतस की चेतना को भूल बैठते हैं और यह भी कि बाह्य चेतना और अंतस की चेतना परस्पर संबंधित हैं। मनुष्य खुद को विषय और विषयी, दोनों रूपों में ग्रहण कर पाता है। मनन करने की क्षमता का माध्यम और परिणाम आत्म–नियंत्रण से जुड़ा हुआ है। भारतीय परंपरा में आत्म–नियंत्रण पाने के उपाय के रूप में अभ्यास और वैराग्य की युक्तियां सुझाई गई हैं। इसमें अभ्यास आंतरिक है, वैराग्य बहिर्मुखी। अर्थात अंदर और बाहर, दोनों का संतुलन होना आवश्यक है। अभ्यास का आशय योग का अभ्यास है, जो हमें अपने मानसिक जगत को शांत और स्थिर रखने के लिए जरूरी है। दूसरी ओर बाह्य जगत के साथ अनुबंधित होने से बचने के लिए वैराग्य या अनासक्ति भी अपनानी होगी। वस्तुतः दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और एक के बिना दूसरा संभव भी नहीं है। यदि बाहर की दुनिया ही अंदर भी भरी रहे तो अंतश्चेतना विकसित नहीं होगी। इसलिए अभ्यास यानी योग वैराग्य का सहायक या अनुपूरक समझा जाना चाहिए। इसके लिए विवेक की परिपक्वता चाहिए, जिसके लिए जगह बनानी होगी। आज के दौर में अंतश्चेतना और बाह्य चेतना, दोनों की ओर ध्यान देना जरूरी है। आनंद की तलाश तभी पूरी हो सकेगी, जब हम अपने ऊपर नियंत्रण करें। पूर्णता अंदर और बाहर की दुनिया के बीच संतुलन बनाने में ही है।

महर्षि पतंजलि यदि योग को चित्त वृत्तियों के निरोध के रूप में परिभाषित करते हैं तो उनका आशय है अपने आप को बाहर की दुनिया में लगातार हो रहे असंयत बदलावों को अनित्य मानते हुए अपने मूल अस्तित्व को उससे अलग करना। मिथ्या किस्म की चित्त–वृत्तियां भ्रम और अयथार्थ को जन्म देती हैं, जिन्हें महर्षि पतंजलि ने क्लिष्ट चित्त–वृत्ति की श्रेणी में रखा है। इससे बचने का उपाय योग है और उससे द्रष्टा अपने स्वरूप में वापस आ पाता है। योग द्वारा आत्म–नियंत्रण स्थापित होना हमारी घर वापसी की राह है। तब हम अपने में स्थित हो पाते हैं यानी स्वस्थ होते हैं। योग को अपनाना मनुष्य के लिए अस्तित्व के दायरें का विस्तार है। यह उसके लिए अपने समग्र अस्तित्व की वह तलाश है, जो उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त करती है। चूंकि योग समग्र जीवन को परिचालित करने वाला और भारत का मनुष्यता के लिए अनुपम उपहार है इसलिए उसे दैनिक जीवन का अंग बनाना हम सबका ध्येय होना चाहिए।

साभार-दैनिक जागरण
दिनांक-20 जून, 2022

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com